Original Research Paper Hindi

गुजराती उपन्यास 'पृथ्वीवल्लभ' का मुंजराज

डॉ.उत्तम पटेल

अध्यक्ष, हिंदी विभाग, श्री वनराज आर्ट्स एण्ड कॉमर्स कॉलेज, धरमपुर, जिला.वलसाड-369050 (गुजरात)

ABSTRACT

मुंजराज कन्हैयालाल मुंशी द्वारा रचित ऐतिहासिक लघु उपन्यास पृथ्वीवल्लभ का नायक है। रसिकप्रिय मालवपति मुंज का, उसी के द्वारा सोलह-सोलह बार पराजित हुए तैलंगण के चालुक्यराज तैलप द्वारा कैद होता है। तब तैलप द्वारा हाथी के पैरों तले कुचलवाकर मारा जाता है। मुंज कामदेव के समान सुंदर, काव्य-प्रेमी, विद्या-व्यसनी, उदार व भाग्यवादी है। वह स्वयं को पृथ्वी के पापियों में श्रेष्ठ समझता है। मुंज रसिक वल्लभ है, अजेय है। मुंजराज तो मरकर भी तैलप को हरा देता है। इसीलिए तो वह पृथ्वीवल्लभ है।

KEYWORDS मुंजराज, मृणाल, रसिक, अप्रतिम।

Manuscript-

प्रस्तावना (INTRODUCTION) - 'पृथ्वीवल्लभ' (1920) गुजराती के प्रसिद्ध उपन्यासकार कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी का चरित्रप्रधान ऐतिहासिक लघु उपन्यास है। रसिकप्रिय मालवपति मुंज का, उसी के द्वारा सोलह-सोलह बार पराजित हुए तैलंगण के चालुक्यराज तैलप द्वारा कैद होना और कैद से भागने के विफल प्रयास की सजा के रूप में हाथी के पैरों तले कुचला जाना, इस उपन्यास की प्रमुख धटना है। कैदी मुंज एवम् तैलप की वैरागी विधवा बहन मृणाल का प्रेम उपन्यास के कथानक को रसयुक्त बना देता है।

मुंजराज 'पृथ्वीवल्लभ' उपन्यास का नायक है। वह अवंतिका का राजा था और उसने तैलंगण के राजा तैलप को सोलह बार पराजित कर एक सामान्य सामंत की तरह अपनी सेवा करवाई थी। तैलप जब दक्षिण में साम्राज्य स्थापन का प्रयत्न कर रहा था तभी आर्य-संस्कृति के केन्द्र स्थान अवंतिका के अधिराज मुंजराज ने उत्तर भारत में साम्राज्य स्थापित किया था। वह आर्यावत्त का अप्रतिम नरेश है। वह अनेक वर्षों से सारे भारत में अपनी विजय-दुंदुभी बजवा रहा था। अपनी प्रसंशा में कवियों की काव्य-शक्ति को कसौटी पर चढ़ा रहा था। मुंज कामदेव के समान सुंदर है। भील्लम मृणाल से उसके रूप के बारे में कहता है कि उसका-सा रूप मैंने कभी नहीं देखा। मुंज के रूप की प्रशंसा सुनकर ही तो अपने को तपस्विनी माननेवाली मृणाल विजय-सवारी के बहाने उसे देखने जाती है।

वह काव्य-प्रेमी व विद्या-व्यसनी है। भील्लम के शब्दों में कहें तो मुंज कवियों का कवि है। उसकी तो सेना में भी कवि हैं। तैलप द्वारा भील्लम राज को मुंज के पकड़ने के बदले में वरदान माँगने के कहने पर भील्लम द्वारा मालवे के कवियों का जीवन-दान माँगने पीछे प्रेरणा-स्रोत तो मुंज ही है। क्योंकि जब भील्लम मुंज को पछाड़कर उसकी छाती पर चढ़ बैठा था और बल पूर्वक उसके शस्त्र छीन लिये थे, उसी समय मुंज ने उसके कान में कहा था- "भील्लम, मेरा कुछ भी हो, इसकी चिंता नहीं, परंतु मेरे कवियों को कष्ट न होने पाये।"[1] मुंज के कवि-प्रेम का इससे बढ़कर उदाहरण और क्या हो सकता है ! क्योंकि पराजित होकर पृथ्वी पर पड़े हुए भी, यमराज के सामने भ्रमित हो जाने के समय भी यह महापुरूष अपने मित्रों को भुला नहीं पाया था। और वह हाथी के सामने जाने में क्षण भर इस लिए हिचकता है कि उसे चिंता है कि "मेरी मृत्यु के बाद बेचारी सरस्वती की क्या दशा होगी-लक्ष्मी तो गोविंद के पास चली जायगी, कीर्ति वीरों के पास, परंतु यश के पुंज-रूप मुंजराज के जाने से बेचारी सरस्वती निरावलम्बा हो जायगी।"[2]

मुंज की उदारता भी देखने योग्य है। युद्ध में भील्लम द्वारा पकड़े जाने पर वह उसकी प्रशंसा में कहता है- "भील्लमराज, तुम धन्य हो। जगत में तुम्हीं यह कर सकते थे।"[3] मुंज बहुत ही प्रतापी राजा था। तैलप की कीर्ति के लिए मुंजराज राहू के समान था। पंद्रह-सोलह बार उसने तैलप को धूल चटाई थी और इससे अकुलाकर तैलप ने कई बार अधीन राजाओं की तरह कर देकर, शांतिपूर्वक राज्य-भोग करने की इच्छा प्रकट की थी। मुंज को पकड़ने पर भील्लम मृणाल से कहता है- "मुंज जैसा नर-रत्न पृथ्वी पर सैंकड़ों वर्षों में कोई एक ही हो सकता है, हजार वर्षों में दिखाई भी दे सकता है, परंतु दस हजार वर्षों में भी यों पकड़े जाते नहीं देखा जा सकता।"[4] वह आगे कहता है कि चौरासी योनियों में बड़े भाग्य से मुंज जैसे नरसिंह को अकेले हाथों पराजित करने का अवसर मिल सकता है। मृणाल से भिक्षा मँगवाते समय मुंज की उद्दात्तता दर्शनीय है जब वह तैलप से कहता है कि "मेरा बदला इस बेचारी से क्यों ले रहे हो?"[5]

मृणाल मुंज को असत्य का अवतार व कलंकी पुरुष कहती है, जिसके छू जाने पर सात पीढियाँ नरक में जाती हैं। उपन्यासकार मुंज का वर्णन इन शब्दों में करते हैं- "उसका शरीर सुगठित और प्रचंड था। उसका मुख मोहक और तेजस्वी था। लंबे काले बाल, सुरसरी-जल की तरह उसके शंकर-जैसे विशाल कंधों पर गिरकर तेजोद्दीप्त चेहरे को और भी अधिक आभावान बना रहे थे। डसने के लिए पीछे खिंचे हुए फणधर के फण की तरह पुष्ट गल-प्रदेश और पीछे झुकाया हुआ उसका मस्तक, गर्व और लापरवाही से जगत का तिरस्कार करते हुए प्रतीत होते थे। हाथों के पीछे जकड़े रहने के कारण, उसके विशाल वक्षस्थल के संगमरमर जैसे चिकने और स्पष्ट स्नायुवाले भाग दैवी वक्षस्त्राण की पूर्ति कर रहे थे, और अपनी दुर्धर्षता और प्रताप दिखाकर मानो जगत को डरा रहे थे। उसके सुगठित पुष्ट पैर, धरती को कँपाते हुए स्तंभ की तरह, कमर के उपरी भाग को धारण किये हुए थे।"[6]

ऐसे मुंज को देखकर तो मृणाल को लगता है कि वह मानो मुंज के सामने बड़ी अधम है और तैलप की राज-सत्ता क्षुद्र हो और यह विजय सवारी तैलप की नहीं, मुंज की ही विजय हो। मुंज को देखकर तो विलास मृणाल से कह ही बैठती है- बहन जी, कैसा अद्‌भुत पुरुष है!"[7] मृणाल भी जब निर्मल आकाश में उदित हुए सूर्य की तरह मुंज के सुंदर चेहरे को देखती है तो सब कुछ भूलकर उसे ही देखती रह जाती है। उसे इतना ही भान रहता है कि "उस मुँह पर एक भी रेखा अपूर्ण न थी। एक भी भाव का अभाव न था। विशाल भाल की स्फटिक-सी निर्मलता, बड़ी और तेजस्वी आँखों में से टपकती हुई मधुरता, सुंदर लुभावने होठों की हास्यमयी मोहकता और चेहरे पर हँसती हुई स्पष्ट विजय ही उसने देखी। उस दिव्य मुख पर काव्य की मधुरिमा थी। उस हास्य में पुष्पधन्वा का सच्चा शर-संधान था।"[8] मुंज को देखकर तो लक्ष्मीदेवी भी मृणाल से कह उठती है- "बहन जी, जो बात महासामंत कहते थे, वह वास्तव में ठीक है। सचमुच वह पृथ्वीवल्लभ है।"[9] मुंज में रूप और तेज की कमी न थी, जिससे साधारण प्राणी भी मोहित हो सकता था। मुंज के ऐसे रूप को देख तो मृणाल की तीस वर्ष की तपस्या भी टूटने लगती है। जिसे वह पापाचारी कहती थी वह तो उसे आनंद और शांति की मूर्ति प्रतीत होता है। यही कारण है कि मुंज की याद आने पर तो वह ध्यान भी नहीं धर सकती।

मुंज अपने आपको पृथ्वी के पापियों में श्रेष्ठ समझता है, जबकि मृणालवती तो अवंतिपति को तैलंगण के शत्रु, असत्यावतार, नरपिशाच मानती है जिससे मिलने से भी कलंक लगता है। उस मुंज को अधमता का अहसास कराने के लिए उससे मिलने जाती है तो देखती है कि मुंज तो निश्चिंत और निर्विकार हो सो रहा है, तो उसका तिरस्कार बढ़ जाता है। वह मृणाल से कहता है कि "मेरी कीर्ति से ही तो तैलप की तपस्विनी बहन यहाँ तक खींच आई है, मेरे कवियों के गान से ही तो मुझे देखने तुम्हें मोह हुआ है और मेरी सेना के प्रताप से प्रतापान्वित होकर ही तो तुमने मुझे पकड़ने का प्रयत्न किया है।"[10] तब तो मृणाल को भी प्रतीत होता है कि जिस मनुष्य को वह अपनी सत्ता और प्रताप के भार से कुचलने आई थी, वह तो बंदीगृह में होते हुए भी अपने महल में आनंद और निश्चिंतता से बैठा है और आनंद से बात करता है। सामान्य मनुष्य तो दुःख से अशांत हो जाता है जब कि मुंज तो कैसा महान पापाचारी है कि कारागार भी उसकी शांति को भंग नहीं कर सकता। और वह मृणाल से कहता है- "जो सुख मैं अपने प्रासाद में प्राप्त करता था, वही यहाँ भी अनुभव कर रहा हूँ। जो सुख मैं विजय में अनुभव करता था, वही इस पराजय में भी मान रहा हूँ। पृथ्वी का जैसा वल्लभ तब था, वैसा ही अब भी हूँ।" काष्ठ पिंजर में ड़ालने पर भी उसका गर्व गलित नहीं होता। उसके हृदय में खिन्नता उत्पन्न नहीं होती। काष्ठपिंजर तो मुंज की महत्ता स्थापित करनेवाला सिंहासन बन जाता है। और वह तो तैलंगण की प्रजा से गीत गवाता है- "तैलप-नृपति-नगरी-सदा, रस गान-तान विहीन है।"[12] और लोग तो उसकी ओर आकर्षित होते जाते हैं।

मुंज पृथ्वीवल्लभ ही नहीं, रसिक वल्लभ है। रसिकता तो उसके रग-रग में प्रवाहित होती है। मृणाल के मिलने आने पर वह उससे कहता है -.."मृणालवती, इस चंचल जीवन को इस प्रकार क्यों खो रही हो ? "[13] और वह मृणाल के हृदय को झुलसाना प्रारंभ करता है। उसे लगता है कि मेरे भीतर की अशांति का एक मात्र कारण है-मुंज। तब वह सोचती है कि मुंज बिलकुल बुरा तो नहीं है। उसका हृदय पहले जैसा स्वस्थ नहीं रहता। मृणाल के दूसरी बार मुंज से मिलने पर और यह कहने पर कि मैं तुम्हारे जीवन को निष्कलंक करना चाहती हूँ, मुंज अपना परिचय देते हुए कहता है- "मैं किसी अनाथ का त्यागा हुआ पुत्र था, और आज पृथ्वीवल्लभ हूँ। सिंहनियों ने मुझे दूध पिलाया, और गजराजों ने मुझ पर व्यंजन किया है। मैंने भिक्षा माँगी है, और सिंहासनों का दान किया है। दुःखियों के लिए मैंने अपना शरीर दे दिया और सुखी लोगों के शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर दिये हैं। मैंने रमणियों का रस-भण्डार लूटा, और लक्ष्मी के समान ललिताओं का शिरच्छेद किया है। श्रुति वाक्यों का पाठ करके देव-दुर्लभ तपश्चर्या की, और श्रृंगार सूत्रों का अध्ययन करके, बीभत्स-रस का भी साक्षात्कार किया है।"[14] और वह मृणाल से कहता है कि जीवन का आनंद तुमने नहीं लुटा है, पुष्प की शय्या में समाया हुआ रहस्य तुम नहीं जानती। मृणाल के क्रोधित होने पर वह कहता है कि "पृथ्वीवल्लभ के हृदय से हृदय मिलाये बिना तुम्हारा निस्तार नहीं है।"[15] और मृणाल द्वारा उसे तमाचा मारने पर तो वह उसका हाथ चूम लेता है। हाथ को दागने पर भी उसकी रसिकता कम नहीं होती। उसके लौटने पर वह कहता है- "मृणालवती, इस घाव पर औषधि लगाने के लिए कल अवश्य आना।"[16]

मृणाल मुंज के चुम्बन को भूल नहीं पाती। उसके भीतर अज्ञात ण्डव चलता है। वह सोचती है कि पापी मुंज ही विजेता हुआ था। "सेना जिसे चाहे सेनापति माने,, मालवा अथवा तैलंगण का चाहे जो राजा हो,, वह स्वयं चाहे जैसी जीवन-मुक्त हो, किन्तु पृथ्वीवल्लभ मुंज तो पृथ्वीवल्लभ ही बना रहा।"[3] मुंज के आकर्षक नेत्रों से तो रस टपकता है। परिणाम मृणाल को प्रतीत होता है कि वह तो सहस्त्रों सूर्यों की कान्ति से दीप्तिमान अनुपम नरोत्तम है। रसिकता के कारण ही तो वह मृणाल का पैंतालीस वर्ष का ब्रह्मचर्य-व्रत भंग कर देता है। वह तो उसकी धमनियों में नृत्य करवाने लगता है। और अभिमानिनी तपस्विनी को उन्मादिनी कर देता है। उसके रोम-रोम को वह आनंदमय चेतन से भर देता है। प्रेम की वेदना का अनुभव मृणाल को मुंज पहली बार करवाता है। और वह मुंज से मिले बिना नहीं रह पाती। वह मुंज से प्रेम करने से अपने आप को रोक नहीं पाती। मुंज को समर्पित होते हुए वह कहती है कि तुम तो बड़े अद्‌भुत हो। "मैं तुम्हें पकड़ लाई-और अंत में स्वयं पकड़ी गई!"[18] इस प्रकार मुंज तो विलास-युद्ध का महारथी है जो मृणाल जैसी अर्ध वृद्धा तापसी को भी प्रेम के रस पान से सजीव कर देता है। यही कारण है कि मृणाल मुंज के साथ तैलंगण से भागने के लिए भी तैयार हो जाती है। मुंज अनन्य प्रेमी है। रसनिधि के उसे बचाने के लिए आने पर वह कहता है कि मुझे अभिसारिका का आदर करना है। मैं उसके बिना नहीं भागूँगा। प्यार को निभाने में वह अटल निश्चयी है। वह मृणाल से कहता है कि मैं तुम्हें ले जाकर अवंतिका की सम्राज्ञी बनाऊँगा। तब मृणाल भी सोचती है कि इस तेजस्वी पुरुष के बिना जीवित रहना असंभव है। अतः वह मुंज को बचाना चाहती है। मृणाल मुंज के बारे सोचती है- "मुंज जवान है,, सुंदर है,, रसिक है, स्त्रियाँ को वश में करने की विद्या में प्रवीण है,, उसकी बातों से ही ज्ञात होता है कि उसने अनेक हृदयों को रिझाया और विरहाकुल किया है,, वह सौंदर्य-भोगी है।"[19] मुंज की रसिकता के कारण ही तो मृणाल उसके भागने के षड्यंत्र का पर्दाफाश करती है। जिससे कि वह हमेशा उसके ही पास रहेगा। अकलंकचरित से भी वह स्पष्ट कहती है कि षड्यंत्रकारियों को पकड़ते समय मुंज का एक बाल भी बाँका नहीं होना चाहिये। मृणाल मुंज के कारण

ही विषय-लालसा में पड़कर उसे छुडवाने का कपट-जाल खड़ा करती है। मुंज के कारण ही तो मृणाल तैलप के यह कहने पर कि तैलंगण में तुझे कोई और न मिला कि तू मुंज पर मोहित हो गई, वह कह उठती है-"...तापसी बनकर मैं जितना गर्व करती थी, तेरी बहन और राज्य की विधात्री होकर जितना गर्व करती थी-उतना गर्व-उससे अधिक गर्व पृथ्वीवल्लभ की वल्लभा होकर करती हूँ।"[20] तैलप द्वारा अंत में मृणाल से भिक्षा मँगवाने पर तो वह मृणाल से एक रसिक प्रणयी की तरह पूछता है- "अब कौन-सी वस्तु का दान करोगी ? जो कुछ तुम्हारे पास था, उसे तो तुम पहले ही दान कर चुकीं!"[21] और मृणाल लोक-लाज त्यागकर मुंज के पैरों में लिपट जाती है और उसकी चरण-रज अपने मस्तक पर चढाती है। अपनी रसिकता के कारण ही मुंज तैलंगण में प्रिय है इसलिए तो उसका वध निकट है, कि आशंका से लोग व सैनिकों के आँखों से आँसू टपकने लगते हैं।

मुंज अजेय है। उससे द्वेष रखनेवाली तैलंगण की प्रजा से भी वह नृत्य और गायन करवाता है। मृणाल जैसी राजनीतिज्ञा को लज्जित कर देता है और उस जैसी प्रभावशालिनी भयंकर स्त्री को भी अधमता का अनुभव करा देता है। तैलप द्वारा यह कहने पर कि मेरे पैर धोकर अपने अपराधों की क्षमा माँग। तब तो वह तिरस्कार से तैलप को सुना देता है- "स्यूनराज,, पृथ्वीवल्लभ के पैर धो-धोकर जिसके हाथ अभी भली-भाँति सूखे भी नहीं हैं, उस तैलप के मैं पैर धोऊँ ?"[22] तैलप के आदेश पर सामंत मुंज को पकड़ते तो हैं, किन्तु झुका नहीं पाते। उसमें अद्‌भुत बल है। पैर न धोकर वह तैलप का मान भंग करता है। मुंज को मुक्त कराने के षड्यंत्र का पर्दाफाश होने पर तैलप द्वारा यह कहने पर कि मैं तुझे हाथी के पैरों से कुचलवाऊँगा- तब मुंज का उससे यह कथन कि "वध भले ही करा देना, पर वही करना, जो मेरे मस्तक को शोभा दें।"[23] -उसके अप्रतिम गर्व का सूचक है। तैलप द्वारा मुंज से भिक्षा मँगवाने पर तो भिक्षा पात्र उसके हाथ में राजचिह्न के समान लगता है। मृणाल भी तैलप से स्पष्ट शब्दों में कहती है- "वास्तव में ही यह पृथ्वीवल्लभ है। तू चाहे सिर पटककर मर जाय तो भी पृथ्वीवल्लभ नहीं हो सकेगा।"[24] और वह भिक्षा माँगकर दिग्विजय करता है। मृत्यु दंड के लिए तो वह स्वयं हाथी की सूँड़ से लटक जाता है और हँसता हुआ, गर्व से खेल खेलता- हुआ मृत्यु का वरण करता है।

मुंज भाग्य में विश्वास करता है। इसलिए तो भोज द्वारा स्वयं को बचाने के लिए आने पर वह कहता है- "अमात्य रुद्रादित्य की भविष्यवाणी भूल गये ? उसने क्या कहा था ? पृथ्वीवल्लभ, जीवन में एक ही बार गोदावरी को लाँघकर जायेगा,, दूसरी बार नहीं।"[25] और इस भविष्यवाणी को वह सच सिद्ध करता है।

मुंज जैसे अवंतिका पति द्वारा सैनिक को लात मारना, भिक्षा माँगते हुए स्त्रियों से बात करना, लोगों से तैलप की अपकीर्ति का गान करवाना शोभा नहीं देता। मुंज का इस प्रकार चित्रण करके उपन्यासकार ने उसके किरदार से अन्याय किया है।

निष्कर्ष (CONCLUSIONS) - इस प्रकार मुंज, मृणाल के शब्दों में कहें तो अधमता का अवतार, पाप के पंक में पड़ा, पापी, निर्लज्ज, चाण्डाल, लंपट, अधमों से अधम, अनोखा और प्रभावशाली व्यक्ति व तेजस्वी, अद्‌भुत और अप्रतिम पुरूष है, तो रसनिधि के अनुसार वह माँ सरस्वती का प्रिय सम्राट है, सूर्य है, देव है। अनेक लोग उसके रूप और गुण पर मुग्ध हैं, जो देव की तरह चलता है। तैलप जिसे अभिमानी व पापाचारी कहता है, मुंज धरणीधर के समान, सिंह के समान है-जो कभी लज्जित नहीं होता। सुंदर, रसिक, कवि व विद्या-प्रेमी, अजेय, उदार व भाग्यवादी मुंज मरकर भी तैलप को हरा देता है। उपन्यास की एक स्त्री-पात्र लक्ष्मीदेवी के शब्दों में कहें तो- 'सचमुच वह पृथ्वीवल्लभ है।'[26]

संदर्भ-संकेत **(References)-**

1 मुंशी, कन्हैयालाल (1998),पृथ्वीवल्लभ,पृ.34, नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन
2 वही.पृ.147
3 वही.पृ.15
4 वही.पृ.21
5 वही.पृ.145
6 वही.पृ.28
7 वही.
8 वही.पृ.29
9 वही.
10 वही.पृ.51-52
11 वही.पृ.53
12 वही.पृ.73
13 वही.पृ.52
14 वही.पृ.85
15 वही.पृ.86
16 वही.पृ.88
17 वही.पृ.89-90
18 वही.पृ.109
19 वही.पृ.120
20 वही.पृ.141
21 वही.पृ.145
22 वही.पृ.98
23 वही.पृ.125
24 वही.पृ.143
25 वही.पृ.111
26 वही.पृ.29